शजरए
आलियह, क़ादरीयह, बरकातीयह,
रज़वीयह, मुस्तफ़वीयह
पीरे तरीक़त हज़रत
मौलाना मुहम्मद सिब्तैन रज़ा
खान क़ादरी मद्दज़िल्लहुल आली

بسم الله الرحمن الرحيم

या इलाही रहम फ़रमा मुस्तफ़ा के वास्ते
या रसूलल्लाह करम कीजिये ख़ुदा के वास्ते

*---**---**---*

मुशकिलें हलकर शहे मुशकिल कुशा के वास्ते
कर बलाएँ रद्द शहीदे करबला के वास्ते

*---**---**---*

सैय्यदे सज्जाद के सदके में साजिद रख मुझे
इल्मे हक दे बाक़िरे इल्मे हुदा के वास्ते

*---**---**---*

सिदके सादिक़ का तसद्दुक सादिकुल इस्लाम कर
बे गज़ब राज़ी हो काज़िम और रज़ा के वास्ते

*---**---**---*

बहरे मारूफ़ो सरी मारूफ़ दे बेखुद सरी
जुन्देहक़ में गिन जुनैदे बा सफ़ा के वास्ते

*---**---**---*

बहरे शिबली शेरे हक दुनिया के कुत्तों से बचा
एक का रख अबदे वाहिद बेरिया के वास्ते

बुल फ़रह का सदका कर ग़म को फ़रह दे हूसनो साद
बुल हसन और बू सईदे सादजा के वास्ते

*---**---**---*

क़ादरी कर क़ादरी रख क़ादरीयों में उठा
क़दरे अब्दुल क़ादिरे कुदरत नुमा के वास्ते

*---**---**---*

अहसनल्लाहू लहू रिज़क़न से दे रिज़के हसन
बन्दए रज़्ज़ाक़ ताजुल असफ़ि या के वास्ते

*---**---**---*

नसरबी सालेह का सदक़ा सालिहो मन्सूर रख
दे हयाते दीं मुहिय्ये जां फ़िज़ा के वास्ते

*---**---**---*

तूरे इर्फ़ानों उलुव्वो हम्दो हुसनाओ बहा
दे अली मूसा हसन अहमद बहा के वास्ते

*---**---**---*

बहरे इब्राहीम मुझ पर नारे ग़म गुलज़ार कर
भीक दे दाता भिकारी बादशाह के वास्ते

*---**---**---*

ख़ानए दिल को ज़िया दे रूए ईमां को जमाल
शहज़िया मौला जमालुल औलिया के वास्ते

दे मोहम्मद के लिए रोज़ी कर अहमद के लिए
ख्वाने फज़लुल्लाह से हिस्सा गदा के वास्ते

*---**---**---*

दीनो दुनिया की मुझे बरकात दे बरकात से
इश्के हक़ दे इश्क़िए इश्क़ इन्तिमा के वास्ते

*---**---**---*

हुब्बे अहले बैत दे आले मुहम्मद के लिए
कर शहीद इश्क़ हम्ज़ा पेश्वा के वास्ते

*---**---**---*

दिल को अच्छा तन को सुथरा जान को पुर्नूर कर
अच्छे प्यारे शम्स दीं बदरूल उला के वास्ते

*---**---**---*

दो जहां में ख़ादिमे आले रसुलुल्लाह कर
हजरते आले रसुले मुक़तदा के वास्ते

*---**---**---*

नूरे जानो नूरे ईमां नूरे क़ब्रो हश्र दे
ुल हुसैने अहमदे नूरी लिका के वास्ते

*---**---**---*

कर अता अहमद रज़ाए अहमदे मुर्सल मुझे
मेरे मौला हजरते अहमद रज़ा के वास्ते

सायए जुमला मशाइख़ या ख़ुदा हम पर रहे
रहम फ़रमा आले रहमां मुस्तफ़ा के वास्ते

*---**---**---*

उम्र भर अपनी रज़ा के काम ले सिबतैन से
रहम फ़रमा उसपे जुमला औलिया के वास्ते

*---**---**---*

हश्र तक सर पर मेरे साया रहे सिबतैन का
मेरे मुर्शिद शाहे सिबतैने रज़ा के वास्ते

*---**---**---*

सदक़ा इन आयाँ का दे छे ऐन इज़ इल्मो अमल
अफ़वो इरफ़ाँ आफ़ियत इस बे नवां के वास्ते
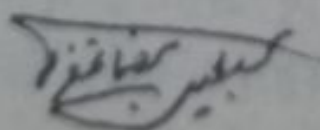
इलाही बहुरमते ई मशाईख़ अक़िबते बन्दए ख़ुद

नाम ______________________

______________________ ग़ुफ़िरा-लहु

साकिन ______________________ बख़ैर गरदां

दस्तख़त : [signature] तारीख़ :

بسم الله الرحمن الرحيم

सिलसिले की फ़ातिहा

शजरा शरीफ़ हर रोज़ बाद नमाज़ फज्र एक बार पढ़ लिया करें इसके बाद दुरूदे ग़ौसिया 7 बार, अलहम्द शरीफ़ यानी सूरए फ़ातिहा 1 बार, आयतल कुर्सी 1 बार, कुलहुवल्लाहू अहद 7 बार दुरूदे ग़ौसिया 3 बार पढ़कर इसका सवाब उन तमाम मशाइख़े किराम (यानी उन बुज़ुर्गों की) रूहों को पहुंचाएं जो शजरे में हैं, और जिसके हाथ पर बैअत की है। अगर वह ज़िन्दा है तो उसके लिए दुआए आफ़ियत व सलामती करें। वरना उनका नाम भी फ़ातिहा में शामिल करें।

दुरूद ग़ौसिया शरीफ़ यह है

अल्ला हुम्मा सल्ले अला सैयेदिना व मौलाना मोहम्मदिन मअदिनिल जूदि वल करम वआलिही व बारिक वसल्लिम।

पंज गंज क़ादरी

बाद नमाज़	फ़ज्र	या अज़ीज़ो या अल्लाह	100 बार
बाद नमाज़	ज़ोहर	या करीमो या अल्लाह	100 बार
बाद नमाज़	अस्र	या जब्बारो या अल्लाह	100 बार
बाद नमाज़	मग़रिब	या सत्तारो या अल्लाह	100 बार
बाद नमाज़	इशा	या ग़फ्फारो या अल्लाह	100 बार

यह सब 100-100 बार अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ 3-3 बार हमेशा पढ़ते रहने से बेशुमार बरकतें दीन और दुनिया की ज़ाहिर होंगी। इसके अलावा

- हर नमाज़ के बाद आयतल कुर्सी एक बार और या बासितो 72 बार।

बाद नमाज़े फ़ज्र तुलुए आफ़्ताब से पहले और बाद नमाज़ मग़रिब 10 बार।

''हस्बियल्लाहु ला इलाहा इल्लाहू अलैहे तवक्कलतु वहुवा रब्बुलअर्शिल अज़ीम''

- 10 बार- रब्बिइन्नी मस्सनियज़र्जुरू व अन्ता अर्हमुर्राहिमीन।
- 10 बार-सयुह़ जमुल जमओ व युवल्लूनद्दूबुर
- 10 बार-रब्बिइन्नीमग़लूबुन फन्तसिर
- 10 बार-अल्लाहुम्मा इन्ना नजअलुका फी नुहूरिहिम व नऊज़ूबिका मिन शुरूरिहिम

इसको हमेशा पढने से सब काम बनेंगे दुश्मन मग़लूब रहेंगे।

ज़िक्रे नफी व इस्बात

लाइलाहा इल्लल्लाह - 200 बार, इल्लल्लाह-400 बार
अल्लाहु - 600 बार, (अव्वल और आख़िर दुरूद शरीफ़ 3-3 बार)

तर्कीबे ज़िक्रे.जिह्र

ज़िक्रे जिह्र से पहले दुरूद शरीफ़ 10 बार, इस्तिग़फ़ार 3 बार और यह आयतं करीमा तीन बार -

फज़कुरूनी अज़ कुर्कुम वश कुरूली वलातकफुरून।

पढ़कर अपने ऊपर दम करे फिर ज़िक्रे जिह्र शुरू करें। लाइलाहा इल्लल्लाह 200 बार, इल्लल्लाह 400 बार, अल्लाहू 600 बार यह ज़िक्रे दवाज़दह तसबीह है इसके बाद हक-हक 100 बार या कम या ज्यादा जैसा हो बतौर 3 या 4 ज़रबी

कज़ाए हाजात

क़ज़ाए हाजात व हुसूले ज़फर मग्लूबिये दुशमनान (यानी हाजतें पूरी होने के लिए कामियाबी हासिल करने और दुश्मनों को ज़ेर करने के लिए) निहायत हैरत अंगेज़ पुरअसर अमलियात, हर मुराद हासिल होने और बलाओं को दफा करने के लिए।

- **अल्लाहो रब्बी लाशरीकलहू** - 874 मर्तबाअव्वल व आख़िर 11-11 बार दुरूद शरीफ़ मुकर्ररा तादाद को बावज़ू क़िबला की तरफ मुंह करके दो ज़ानू बैठकर रोज़ाना जब तक मुराद हासिल न हो पढ़ें। और इसी को उठते बैठते, चलते फिरते बा वज़ू और बेवज़ू हर हाल बे गिनती बेशुमार ज़बान पर जारी रखें।
- **हसबुनल्लाहो व नेअमलवकील** - 450 बार रोज़ाना ताहुसूले मुराद (यानी जब तक मुराद हासिल न हो।) पढ़े अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ 11-11 बार जिस वक़्त घबराहट हो इसी कल्मे की बेशुमार तकसीर करें।
- बाद नमाज़ इशा 111 बार तुफ़ैले हज़रते दस्तगीर दुश्मन होवे ज़ेर अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ 11-11 बार ता हुसुले मुराद यह तीनों अमल उमूरे मज़कूरा (यानी उपर लिखे गए कामों) के लिए निहायत आसान और सहलुल हुसूल हैं। इनसे गफलत न की जाए। जब कोई हाजत पेश आए हर एक उतनी-उतनी मर्तबा पढ़ा जाए पहले और दूसरे के लिए कोई वक़्त मुक़र्रर नही है। और जिस ज़माने में कोई ख़ास हाजत दरपेश हो पहले और दूसरे को 100-100 बार रोज़ाना

पढ़ लिया करें, जिस वक्त चाहे पढ़े और तीसरे का वक्त बाद नमाज़े इशा है जब तक मुराद हासिल न हो तीनो इसी तरतीब से पढ़े। (खलीफए हुज़ूर मुफ़्तिए आजमे हिन्द नबीरए आला हज़रत अल्लामा शाह हकीमुल इस्लाम जनाब सिबतैन रज़ा ख़ान साहब किबला बरेलवी)

ज़रूरी हिदायत

- मज़हब अहले सुन्नत व जमाअत पर कायम रहें। जिस पर उल्माए हरमैन है। सुन्नियों के जितने मुख़ालिफ़ फ़िरके है मसलन देवबन्दी, वहाबी, राफ़ज़ी (शिआ), तबलीग़ी, नदवी, नेचरी, चकडालवी, ग़ैरमुक़ल्लिद, क़ादियानी, मौदूदी वगैरा। और सबको अपना दुश्मन और मुख़ालिफ जाने, इनकी बात न सुनें, इनके पास न बैठें और ऐसे लोगों की तहरीर न पढ़ें क्योंकि (मआज़अल्लाह) शैतान को दिल में वसवसा डालते देर नहीं लगती आदमी को जहां माल या आबरू का अंदेशा (यानी खतरा) हो हरगिज़ न जाएगा और दीन व ईमान ज़्यादा अज़ीज़ और कीमती हैं। इनकी हिफ़ाज़त में हमें पूरी कोशिश करनी चाहिए। माल और दुनिया की इज़्ज़त दुनिया की ज़िन्दगी ही तक महदूद हैं। इस दीन और ईमान से हमेशगी के घर (यानी आख़िरत) में काम पड़ता है। इनकी फिक्र सबसे ज़्यादा लाज़िम है।
- नमाज़े पंजगाना (यानी पांच वक्त की नमाज़ें) निहायत ज़रूरी है। मर्दों को मस्जिद और ज़माअत में शामिल होना भी वाजिब है। बे

नमाज़ी मुसलमान गोया तस्वीर का आदमी है कि ज़ाहिर सूरत इन्सान की है मगर इन्सान जैसा काम कुछ नहीं ! बे नमाज़ी वही नहीं है जो कभी नमाज़ न पढ़े बल्कि जो एक वक़्त भी क़सदन (यानी जानबूझकर) नमाज़ छोड़े वह भी बेनमाज़ी हैं। किसी भी नौकरी मुलाज़मत ख़्वाह तिजारत वगैरा किसी हाजत के सबब नमाज़ कज़ा कर देनी सख़्त ना शुकरी, पर्ले सिरे की नादानी है। कोई आका यहां तक कि काफ़िर का भी अगर नौकर कोई हो तो अपने मुलाज़िम को नमाज़ से बाज़ नहीं रख सकता, और अगर मना करे तो ऐसी नौकरी ही हरामे क़तई है। और कोई वसीला रिज़्क का नमाज़ खोकर बरकत नहीं ला सकता है। रिज़्क़ तो उसी के हाथ में है जिसने नमाज़ फर्ज़ की है। और उसके तर्क पर सख़्त गज़ब फ़रमाया है। (वल इयाजोबिल्लाह तआला)

- जितनी नमाज़ें कज़ा हो गई हों सबका हिसाब ऐसा लगाएं कि तख़मीने (यानी अन्दाज़े) में बाक़ी न रह जाएं। ज़्यादा हो जाएं तो हर्ज नहीं। और बक़दरे ताक़त रफ़्ता रफ़्ता निहायत जल्द अदा करें काहिली न करें क्योंकि मौत का वक़्त मालूम नहीं और जब तक फर्ज़ ज़िम्मे पर बाक़ी होता है कोई नफ़्ल कुबुल नहीं किया जाता कज़ा नमाज़ें जब मुतअद्दिद है यानी बहुत ज़्यादा हों मसलन 100 बार की फज्र कज़ा हुई यानी जब एक अदा हुई तो बाक़ियों में से पहली है। इसी तरह ज़ोहर वग़ैरा हर नमाज़ में नियत करें। कज़ा में फक़्त फर्ज़ और वित्र यानी हर दिन और हर रात की बीस रक़अत

अदा की जाती है।

- जितने रोज़े भी कज़ा हुए हों, दूसरा रमज़ान आने से पहले अदा कर लिये जाएं। क्योंकि हदीस शरीफ़ में है कि जब तक पिछले रमज़ान के रोज़ों की कज़ा न कर ली जाए अगले रोज़ें क़ुबूल नहीं होते।
- जो साहिबे माल हैं ज़कात भी दे जितने बरसों की ज़कात न दी हो फ़ौरन हिसाब करके अदा कर दे। हर साल की ज़कात साल पूरा होने से पहले दे दिया करें। साल पूरा होने के बाद देर लगाना गुनाह है। लिहाज़ा शुरू साल से रफ़्ता-रफ़्ता देते रहे। साल पूरा होने पर हिसाब करें। अगर पूरी जकात अदा हो गई हो तो बेहतर वर्ना जितनी बाकी रह गई हो फ़ौरन दे दें और अगर कुछ ज़्यादा ज़कात निकल गई है तो आइन्दा साल में मुजरा कर लें। अल्लाह तआला किसी का नेक काम जाय नहीं करता।
- साहिबे इस्तिताअत पर हज भी फर्ज़े आज़म है अल्लाह तआला ने उसकी फर्ज़ीयत बयान करके फर्माया और जो कुफ्र करे तो अल्लाह सारे जहान से बे परवाह है। नबी करीम सल्लल्लाहो तआला अलैह वसल्लम ने तारिके हज (यानी हज न करने वाले को फरमाया) चाहे वह यहुदी होकर मरे या नसरानी होकर (वल इयाज़ो बिल्लाह तआला) नफ़्स के हीले बहाने और महज़ अन्देशों की वजह से बाज़ रहें।
- किज़्ब(झूठ), फहश (बेहयाई); चुग़ली, ग़ीबत, ज़िना, लवातत,

ज़ुल्म, ख़ियानत, रिया (यानी दिखावा), तकब्बुर (घमण्ड), दाढ़ी का मुंडाना या कतराना, फासिकों की वज़ा (यानी रविश) और हर बुरी खसलत यानी बुरी आदत से बचे। जो इन सातो बातों का आमिल रहेगा अल्लाह और रसूल के वादे से उसके लिए जन्नत है।

तहज्जुद

फर्ज़ इशा पढ़ने के बाद कुछ देर सो रहे, फिर शब में तुलूए सुबह से पहले जिस वक़्त आँख खुले। वही वक़्त तहज्जुद का है। वज़ू करके कम अज़ कम दो रक्अत पढ़ले तहज्जुद हो गई और सुन्नत आठ रकअत है। किरअत का इख़्तियार है। जितना चाहे पढ़े और बेहतर है कि जितना कुरआन करीम याद हो उसकी तिलावत उन रक्अतों में करें, और अगर कुल याद हो तो कम से कम तीन रात ज़्यादा से ज़्यादा चालीस रात में ख़त्म करें याद न हो तो हर रक्अत में 3-3- बार सूरए इख़्लास पढ़ें कि जितनी रक्अते पढ़ेगा उतने ख़त्म कुरआन मजीद का सवाब मिलेगा।

परदे की अहमियत

औरतें परदे को फर्ज़ जाने हर ना महरम (यानी जिस मर्द से उसका निकाह हो सकता है) से परदा फर्ज़ है। न बेपरदा बाहर फिरे न बेपरदा घर में रहे बारीक कपड़े जिनसे बाल या बदन चमके पहनकर या पहुंचो से ऊपर कलाई का हिस्सा, पांव के टखने के ऊपर पिन्डली का हिस्सा, और गला, सीना खोलकर या बारीक

कपड़ों से नुमाया (ज़ाहिर) होने की हालत में सिर्फ़ ग़ैर नहीं जेठ भी, देवर, बहनोई, नहीं अपने सगे चचाज़ाद, खालाज़ाद, फूफीज़ाद, मामूज़ाद भाई के सामने होना भी हराम है। हराम है बदअंजाम है।

मरदों पर फ़र्ज है

अपनी बीबीयों, बेटियों, बहनों वगैरह महरम को बेपरदगी से बचाएं। परदे की ताकीद करें और वह न माने तो अगर उन्हें सजा दे सकते है तो सजा दें। जो मर्द अपने महरम को बेपरदगी की परवा न करके गैरमहरमों के सामने घुमाये, फिराये, खूसूसन इस तरह के बेपरदगी के साथ बाज़ आज़ा की बेसतरी (बेपरदगी) भी हो दय्युस ठहरेगा (वल आयाजो बिल्लाहे तआला) अल्लाह के रास्ते में कोशिश से एक आन को तुम न थको। खुदा की तलब में सई करते रहो, जितने हो सके मुजाहिदे करो। अल्लाह फ़रमाता है जो हमारी तलब में कोशिश करते हैं जरूर हम उन्हें अपनी राहें दिखाते हैं और अपने मकसुद को पाते है। अल्लाह तआला उनके लिए खैरो बरकत का हर दरवाज़ा खोल देता है उसके रास्ते में कदम रखते ही अल्लाह करीम के ज़िम्म-ए-करम पर तुम्हारे लिए अज्र (बदला) होगा। हुज़ूरपुर्नूर ने फ़रमाया, मन तलबा शैअन व जद्दा वजदा। जो कोई चीज़ चाहेगा और कोशिश करेगा पा लेगा। हदीस ही में है मन तलबलाह वजदहू जिसने अल्लाह की तलब की उसको पाया। हां-हां बढ़े चलो बराबर बढ़े चलो मोहब्बत इख़लास शर्त है। पीर की

मोहब्बत रसूल की मोहब्बत है मोहब्बत जितनी ज़्यादा होगी और अक़ीदत जितना पुख़्ता होगी उतना ही फ़ायदा ज़्यादा से ज़्यादा होगा अगर चे पीर बाकमाल न हो मगर पीर सही हो पीर की शर्तें उसमें पाई जाती हों सिलसिला मुत्तसिल हो (यानी दरम्यान से सिलसिला कहीं से कटा न हो) तो सरकार से फ़ैज़ जरूर मिलेगा। ए फरज़ंदे तौहीद हर मामले में तौहीद को निगाह रख। ख़ुदा यके व मोहम्मद यके व पीर यक (ख़ुदा एक है मोहम्मद एक है पीर भी एक है) तेरी तवज्जोह का क़िबला भी एक होना ज़रूरी है जिसकी नज़र परेशान हो या दिल परेशान उसकी मिसाल धोबी का कुत्ता घर का न घाट का। अल्लाह की रजा पर राज़ी रह। दीन व दुनिया के हर काम इख़लास के साथ उसी के लिये कर, शरीअत की पैरवी कर। शरीअत के हुक्म से एक क़दम बाहर न रख। खाना, पीना, उठना, बैठना, लेटना, सोना, जागना, आना, जाना, कहना, सुनना, लेना, देना, कमाना, खर्च करना हर काम उसी के लिए कर। ऐ रज़वी फना फिर रज़ा होकर सर से पैर तक रज़ाए अहमदी व रज़ाए इलाही हो जा।

तेरा मक़सूद बस तेरा माबूद हो।
उसकी रज़ा ही तेरा मतलूब हो॥

रिया (यानी दिखावा) से बचने की कोशिश करता रहे। हर काम इख़लास से ख़ुदा की रज़ा के लिए शरीयत की पैरवी में कर। ये बहुत

बड़ी सआदत (नेक बख़्ती और बहुत बड़ा मुजाहिदा और रियाज़त है हमारे बाज़ मशाइख़ सिलसिले के बुजुर्ग) फरमाते हैं कि कोई रियाज़त व मुजाहिदा अरकान व आदाबे नमाज़ की रिआयत करने के बराबर नहीं। खास कर पांचों वक़्त मस्जिद में जाकर नमाज़ जमाअत के साथ अदा करना।

ख़त्म कुरआने करीम

औलिया ए कामलीन का कहना है कि कुरआने पाक की तिवालत हाजतों के पूरा होने के लिए बिला शुंबा तजुर्बा किया हुआ एक अमल है कि जितना भी हो सके रोज़ाना अदब के साथ पढ़ता रहे अगर इस तरह पढ़े ते बहुत बेहतर और ख़ुदा चाहे तो जल्द कामयाबी हो। जुमे के दिन से शुरू करे और जुमेरात को ख़त्म। जुमे के दिन अलहम्दो शरीफ से सूरते माइदा के आख़िर तक, हफ़्ते (सनीचर) के दिन सूरए अनाम से सुरए तौबा के आख़िर तक, इतवार को सूरए यूनुस से आख़िर सुरए मरियम तक, पीर के दिन सुरए ताहा से आख़िर सुरए क़सस तक, मंगल को सूरए अनक़बूत से आख़िर सूरते स्वाद तक, बुध को सुरए जुमुर से आख़िर सूरए रहमान तक, रोज़े जुमेरात सुरए वाक़्या से आख़िर कुरआन तक तन्हाई में पढ़े। बीच-बीच में किसी से बात न करें। हर अहम काम के लिए लगातार बारह ख़त्म को अकसीरे आज़म यक़ीन करें।

फ़ज़ीलतें दुरूदे पाक

दरूद शरीफ की फ़ज़ीलतें और बरकतें बेशुमार हदीसों में ज़िक्र हुई। यहां सिर्फ एक हदीस लिखी जाती है जिससे अंदाज़ा होगा कि हुज़ूर नबी ए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के दरबारे पुरअनवार में दुरूद शरीफ का हदिया पेश करना किस क़दर दुनिया और आख़िरत के फायदे रखता है। हज़रत उबइ इब्ने क़ाब रज़िअल्लाह तआला अन्हो फ़रमाते हैं मैंने नबी ए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया कि हुज़ूर मैं आप पर कसरत से दुरूद भेजना चाहता हूँ तो उसके लिए कितना वक़्त मुकर्रर करू? हुज़ूर ने फ़रमाया जितना चाहो हाँ अगर ज़्यादा करो तुम्हारे लिये बेहतर है। मैंने अर्ज़ किया आधा वक़्त फ़रमाया तुम्हारी खुशी हां अगर ज़्यादा करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। मैंने कहा कि दो तिहाई वक्त तो हुज़ूरे रहमत ने इरशाद फ़रमाया अगर ऐसा करो तो तुम्हारे तमाम गुनाह ज़ाहिर छुपे हुए मिटा दिये जायेंगे। (तिरमिज़ी शरीफ)

नोट : तालेबीन को (चाहने वालों को इख़्तियार है कि वो ऊपर ज़िक्र किये हुए तमाम वज़ीफे, कलमा तय्यिबा और कुरआने पाक की तिलावत और अपने शैख़ (पीर साहब) के तसव्वुर में मशगूल रहें इन्शा अल्लाह तआला बहुत फायदे हासिल होंगे।

तसव्वुरे शैख़

तन्हाई में आवाज़ों से दूर बैठकर पीर साहब के मकान की तरफ मुँह करके और उनका विसाल हो गया हो तो जिस तरफ उनका मज़ार हो मुतवज्जेह होकर बैठें। महज़ ख़ामोश बहुत अदब इन्तिहाई ख़ुशू के साथ शैख़ (पीर) की सूरत का तसव्वर (ख़्याल) करें और अपने आप को उनके हुज़ूर हाज़िर जाने और यह ख़्याल दिल में जमाये कि सरकारे मदीना सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अनवार और फुयूज़(फैज) शैख़ के क़ल्ब पर फ़ाइज़ हो रहे है। और मेरा दिल शैख़ के दिल के नीचे लगा हुआ भीक मांग रहा है, उसमें से अनवार उबल-उबल कर मेरे दिल में आ रहे हैं। इस तसव्वुर को बढ़ाइये यहां तक कि खूब जम जाए और तकल्लुफ की हाजत न रहे इसकी इन्तहा पर शैख़ की सूरत ख़ुद मिसाली शक़्ल में होकर मुरीद के साथ रहेगी और हर काम में मदद करेगी और इस रास्ते में जो मुश्किलें उसे पेश आएंगी उसका हल बतायेगी।

بسم الله الرحمن الرحيم

या इलाही हर जगह तेरी अता का साथ हो
जब पड़े मुश्किल शहे मुश्किल कुशा का साथ हो

• •• •• •• •

या इलाही भूल जाऊं नज़ा की तकलीफ़ को
शादिये दीदारे हुसने मुस्तफ़ा का साथ हो

• •• •• •• •

या इलाही गोरे तीरा की जब आये सख़्त रात
उनके प्यारे मुंह की सुब्हे जां फ़ज़ा का साथ हो

• •• •• •• •

या इलाही जब पड़े महशर में शोरे दारो गीर
अम्न देने वाले प्यारे पेशवा का साथ हो

• •• •• •• •

या इलाही जब ज़बानें बाहर आएं प्यास से
साहिबे कौसर शहे जूदो अता का साथ हो

• •• •• •• •

या इलाही सर्द मेहरी पर हो जब ख़ुरशीदे हश्र
सय्यिदे बे साया के ज़िल्ले-लिवा का साथ हो

• •• •• •• •

या इलाही गरमिये महशर से जब भड़के बदन
दामने महबूब की ठंडी हवा का साथ हो

• •• •• •• •

या इलाही नामए आमाल जब खुलने लगें
ऐब पोशे ख़ल्क सत्तारे ख़ता का साथ हो

या इलाही जब बहें आँखें हिसाबे जुर्म में
उन तबस्सुम रेज़ होठों की दुआ का साथ हो

• •• •• •• •

या इलाही जब हिसाबे ख़न्द ए बेजा रूलाए
चश्मे गिर्याने शफ़ीए मुर्तजा का साथ हो

• •• •• •• •

या इलाही रंग लाये जब मेरी बेबाकियां
उनकी नीची-नीची नज़रों की हया का साथ हो

• •• •• •• •

या इलाही जब चलूँ तारीक़ राहेपुल सिरात
आफ़्ताबे हाशिमी नूरूल हुदा का साथ हो

• •• •• •• •

या इलाही जब सरे शमशीर पर चलना पड़े
रब्बे सल्लिम कहने वाले ग़मजुदा का साथ हो

• •• •• •• •

या इलाही जो दुआएं नेक हम तुझसे करें
कुदसियों के लब से आमीन रब्बना का साथ हो

• •• •• •• •

या इलाही जब रज़ा ख़्वाबे गिरां से सर उठाये
दौलते बेदार इश्क़े मुस्तफ़ा का साथ हो

• •• •• •• •

या इलाही ले चले जब दफ़न करने कब्र में,
गौसे आज़म पेशवाए औलिया का साथ हो

• •• •• •• •

(हर नमाज़ के बाद यह मुनाजात पढ़े)

कज़ा नमाज़ों की अदायगी की आसान तरकीब

हर मुसलमान पर ख़्वाह मर्द हो या औरत बालिग होते ही नमाज़ पढ़ना फर्ज़े कतई है। अगर कोई शक्स बालिग़ हो के कई साल बाद नमाज़ी हुआ तो उस दरमियान की नमाज़े जो कज़ा हो चुकी है उसका अदा करना फर्ज़ है। मसलन अब्दुल्लाह 14 बरस की उम्र में बालिग़ हुआ और जब उसकी उम्र 20 साल की हुई तो वोह नमाज़ का पाबंद हुआ तो उसकी 6 बरस की की कज़ा नमाज़ पढ़नी होगी जिस मर्द को अपनेबुलूग़ (बालिग़ होने की मुद्दत) 12 बरस उम्र से क़रार दें क्योंकि फुकहाए कराम ने फ़रमाया है के लड़का 12 बरस की उम्र में बालिग़ होता है इस हिसाब से अपनी उम्र से 12 बरस घटा करके बकाया सालों की कज़ा नमाज़ें अदा करें और जिस औरत को अपने बुलूग़ की तारीख और साल याद न हो वोह अपने बुलूग़ की मुद्दत नौ बरस की उम्र से करार देकर (और साथ ही हर माह से अय्यामें हैज़ और निफ़ास के अय्याम भी कम कर लें के इन दिनों की नमाजों की कज़ा औरतों पर लाज़िम नहीं है) अपनी क़ज़ा नमाज़ों का हिसाब लगाएं और उन्हें अदा करें। हर वोह आदमी जिसके जिम्मे क़ज़ा नमाज़े हो उन पर लाज़िम है के जल्द अज़ जल्द अदा करें। न मालूम किस वक़्त मौत आ जाए हाजते तबइ और ज़रूरी काम (के जिनके बग़ैर गुज़र नही) के अलावा बक़िया औक़ात में क़ज़ा नमाज़े ही अदा करें और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल

से ये उम्मीद रखे के वोह क़ज़ा को कुबुल फ़रमाकर नवाफ़िल के सवाब से भी महरूम न रखेगा।

एक दिन की 20 रकातें होती है यानी फज्र की 2 रक़ात फ़र्ज़, अस्र की 4 रक़ात फ़र्ज़, मग़रिब की 3 रक़ात फ़र्ज़, इशा की 4 रक़ात फ़र्ज़, और वित्र की 3 रक़ात वाजिब, इन नमाज़ों के सिवाए तुलू और गुरूब ज़वाल (जिस वक्त सजदा हराम है) के हर वक़्त अदा कर सकता है और इख़्तेयार है के पहले फज्र की सब नमाज़ें अदा कर लें। फिर अस्र, फिर मग़रिब, फिर इशा, यह सब नमाज़ें बक़दरे ताक़त रफ़्ता-रफ़्ता जल्द अदा कर ले काहिली न करें, जब तक फ़र्ज़ ज़िम्मे बाक़ी रहता है कोई नफ़्ल कुबूल नहीं की जाती। जब क़ज़ा नमाज़ की अदायगी के लिए खड़ा हो तो उस वक़्त उसकी नियत करनी ज़रूरी है मसलन फज्र की नियत यूं करे। मैने सबसे पहली फज्र पढ़ने की नियत की जो मुझसे क़ज़ा हुई। अल्लाह तआला के लिए काबा शरीफ़ की तरफ मुत्वज्ञा होकर अल्लाहो अकबर कहें इसी तरह जोहर, अस्र, मग़रिब, इशा और वित्र की नियत करें। जब लोगो के ज़िम्मे क़ज़ा नमाज़े बहुत ज़्यादा हो उनके लिए इमाम अहले सुन्नत आला हज़रत मुजाहिदे आज़म सैय्यदना इमाम अहमद रज़ा कादरी फाज़िले बरेलवी रदी अल्लाहो तआला अन्हो ने तख़्फ़ीक (आसान तरीका) की 4 सुरते (तरीक़े) इर्शाद फ़रमाया है ताकि वोह आसानी के साथ अपनी क़ज़ा नमाज़े अदा

कर सके और इस बारेशरइ से अपने को जल्द बरी करें के मौत का वक़्त मालूम नहीं। **पहला** : फ़र्ज़ की तीसरी और चौथी रक़ात में अलहम्द शरीफ़ की जगह फ़क्त **सुब्हान अल्लाह** तीन मर्तबा कहकर रूकु में चले जाए। मगर यहां इस बात का ख़्याल रखना ज़रूरी है कि सीधे खड़े होकर सुब्हान अल्लाह शुरू करें और सुब्हान अल्लाह पूरा खड़े-खड़े कहकर रुकू के लिए सर झुकाए। ये तख़फीक (आसानी) सिर्फ़ फ़र्ज़ की तीसरी और चौथी रक़ात के लिए है। वित्र की तीनों रक़ातों में अलहम्द शरीफ़ और सूरा जरूर पढ़ी जाए। **दूसरा** : तस्बीहाते रूकु और सजदे में सिर्फ़ एक बार **सुब्हाना रब्बियल अज़ीम सुब्हाना रब्बियल आला** कहे। मगर, यह हमेशा हर तरह की नमाज़ में याद रखना चाहिए कि जब आदमी रुकू में पूरा पहुंच जाए उस वक्त तसबीह शुरू करें और जब पूरी तसबीह ख़त्म कर लें तो रूकू, सजदे से सर उठाएं। बहुत से लोग रूकु व सजदे में आते - जाते ये तसबीह पढ़ते हैं बहुत गलती करते है। **तीसरा** : येके नमाज़ फज्र में अत्तहियात और जोहर, अस्र, मगरिब, इशा और वित्र में पिछली अत्तहियात के बाद दुरूद शरीफ़ और दुआएं मासूरा की जगह में दुरूद शरीफ **अल्लाह हुम्मा सल्ले अला मोहम्मदिव व आलेही**, पढ़कर सलाम फेर दें। **चौथा** : येके नमाज़े वित्र की तीसरी रक़ात में दुआए कुनुत की जगह तीन या एक बार **रब्बिग फ़िरली** कहें।

(माख़ूज अज़ : फ़तावे रज़विया सफ़ा 621, 622 जिल्द 3, अलमलफ़ूज़ शरीफ़ सफ़ा जिल्द 1)

नाम	माह	मुकाम
सरकारे दो आलम	12 रबीऊल अव्वल 11 हि.	मदीना शरीफ
सैय्यदना हज़रत अली	21 रमज़ानुल मु. 40 हि.	नजफ अशरफ
सैय्यद इमामे हुसैन	10 मोहर्रमुल हराम 61 हि.	करबला शरीफ
सैय्यद इमाम जैनुल आबेदिन	18 मोहर्रमुल हराम 94 हि.	जन्नतुल बकी
सैय्यद इमाम बाकर	7 जिल हज 114 हि.	जन्नतुल बकी
सैय्यद इमाम जाफर सादिक़	15 रज्जबुल मुरज्जब 148 हि.	मदीने मुनव्वरह
सैय्यद इमाम मुसा काज़िम	5 रज्जबुल मुरज्जब 183 हि.	बग़दाद शरीफ
सैय्यद इमाम अली रजा	21 रमज़ानुल मु. 208 हि.	बग़दाद शरीफ
शैख़ मारूफ़ कर्खी	2 मोहर्रमुल हराम 200 हि.	बग़दाद शरीफ
शैख़ सिर्री सिक़ती	13 रमज़ानुल मु. 208 हि.	बग़दाद शरीफ
शैख़ जुनैद बग़दादी	27 रज्जबुल मुरज्जब 297 हि.	बग़दाद शरीफ
शैख़ अबुबक्र शिबली	27 जिल हज 334 हि.	बग़दाद शरीफ
शैख़ अब्दुल वाहीद तमीमी	26 जमादिस्सानी 425 हि.	बग़दाद शरीफ
शैख़ मुहम्मद युसुफ़ बुलफरह	3 शाबान447 हि.	बग़दाद शरीफ
शैख़ बुल हसन अली हाशमी	1 मोहर्रमुल हराम 486 हि.	बग़दाद शरीफ
शैख़ बु सईद मुबारक मखजुमी	27 शाबान513 हि.	बग़दाद शरीफ
सैय्यद अब्दुल क़ादर गौसे आज़म	11,17रब्बीउस्सानी 610हि.	बग़दाद शरीफ
सैय्यद अब्दुररज़्जाक	6 शव्वालुल मुकर्रम 623 हि.	बग़दाद शरीफ
सैय्यद अबु सालेह अब्दुल्लाह	27 रज्जबुल मुरज्जब 656 हि.	बग़दाद शरीफ
सैय्यद मुहिय्यूद्दिन अबु नस्र मुहम्मद	23 शव्वालुल मुकर्रम 736 हि.	बग़दाद शरीफ

नाम	माह	मुक़ाम
सैय्यद अली	3 रज्जबुल मुरज्जब 763 हि.	बग़दाद शरीफ
सैय्यद मुसा बग़दादी	26 सफ़र 781 हि.	बग़दाद शरीफ
सैय्यद हसन बग़दादी	19 मोहर्रम 853 हि.	बग़दाद शरीफ
सैय्यद अहमद जिलानी	11 ज़िलहज 921 हि.	दौलताबाद
मौलाना बहाउद्दीन शत्तारी	5 रबीउससानी 953 हि.	देहली
सैय्यद इब्राहिम इरजी	9 जिलक़द 981 हि.	काकोरी
मौलाना मुहम्मद निजामुद्दीन	21 रज्जबुल मुरज्जब 989 हि.	जिला उन्नाव
मौलाना काज़ी ज़ियाउद्दीन	शब इदुल फितर, 1047 हि.	जहानाबाद
मौलाना जमालुल औलिया	6 शाबान1071 हि.	कालपी शरीफ
सैय्यद मुहम्मद कालपवी	10 सफ़र 1084 हि.	कालपी शरीफ
सैय्यद अहमद कालपवी	14 ज़िलक़द1111 हि.	कालपी शरीफ
सैय्यद फ़जलुल्लाह कालपवी	10 मोहरम 1142 हि.	मया मुकद्दसा
सैय्यद शाह बरकतुल्लाह मारहरवी	26 रमज़ानुल मु. 1164 हि.	मारहरा शरीफ
सैय्यद हमज़ा	14 मोहर्रम 1198 हि.	मारहरा शरीफ
सैय्यद आले अहमद अच्छे मियाँ	17 रबीउल अव्वल 1235 हि.	मारहरा शरीफ
सैय्यद आले रसूल मारहरवी	18 ज़िल हज 1296 हि.	मारहरा शरीफ
सैय्यद बुल हसन अहमदे नूरी	11 रज्जबुल मुरज्जब 1324 हि.	मारहरा शरीफ
इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरेलवी	25 सफ़र 1340 हि.	बरेली शरीफ
शाह मुस्तफ़ा रज़ा बरेलवी	13 मोहर्रम 1401 हि.	बरेली शरीफ

छत्तीसगढ़ में दीनी व इस्लामी तालीम का अज़ीम मरकज़

इदारे शरीयह अहले सुन्नत व दारूल उलुम अनवारे मुस्तफ़ा मौदहा पारा रायपुर

बहम्देही तआला इदारे शरीयह अहले सुन्नत व दारूल उलुम अनवारे मुस्तफ़ा मौदहा पारा रायपुर बहुत ही कम वक़्तों में इस्लामी तालीम व तरबीयत और मस्लके आला हज़रत की इशाअत में ख़िदमत अंजाम दे कर काफी शोहरत हासिल किया है। इस इदारे में दरसे मौलवी, मौलवी आ़लिम, मौलवी फ़ाज़िल, हिफ्ज़ों किरअत के साथ-साथ हिन्दी, अंग्रेजी, गणित और जदीद कम्प्यूटर की पढाई भी इस सत्र से शुरू हो चुकी है। इदारे में अब इलाक़ाई और छत्तीसगढ के बच्चों को प्राथमिकता दी जाएगी। दारूल उलुम में रहने वाले तलबा के खाने-पीने का माक़ूल इन्तेज़ाम है। आप अपनी मदद से इदारे शरीयह अहले सुन्नत व दारूल उलुम अनवारे मुस्तफ़ा मौदहा पारा को ज़रूर याद रखें।
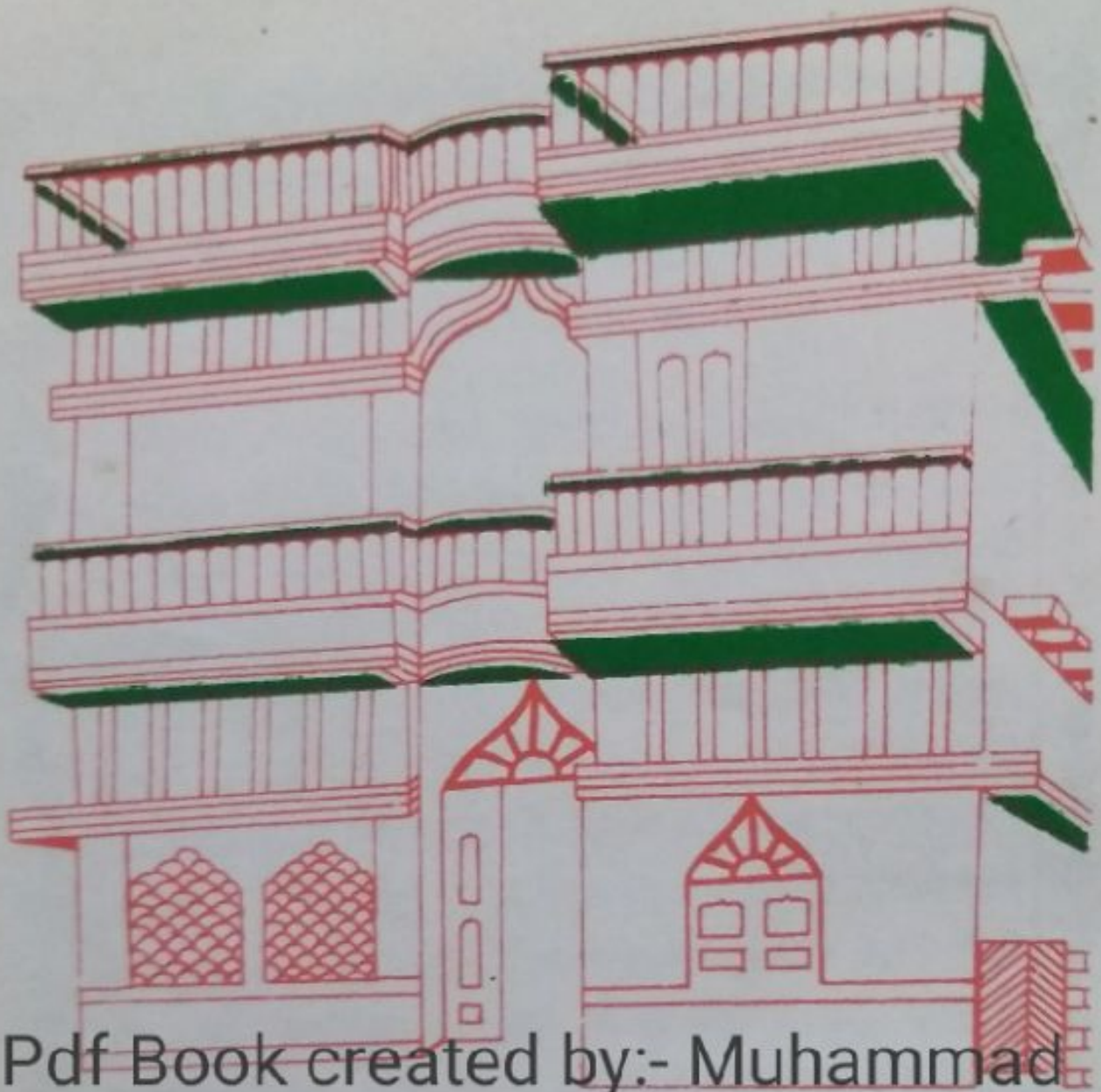
राबते का पता

सदर : हकीमुल इस्लाम, अमीने शरीअत, नबीरए आला हज़रत अल्लामा मौलाना शाह सिबतैन रज़ा खां बरेलवी

इदारए शरीयह अहले सुन्नत व दारूल उलुम अनवारे मुस्तफा

मौदहा पारा रायपुर 492 001 छत्तीसगढ़ (फोन : 534481)

बा एहतेमाम, अंजुमन मुहिब्बाने रज़ा, रायपुर